दैवेन्द्र मिलाप

अर्थात्

प्रेम का संवाद

सुनकर मेरी सीख जोश को थाम लीजिये ।
साहस हो तो मित्र प्रेम का नाम लीजिये ॥
प्रेम-पंथ में कड़े शूल पर शूल गड़ेंगे ।
प्रेम-रत्न के लिये अनेकों विघ्न पड़ेंगे ॥
साहस पड़े तो आइए आसान यह रस्ता नहीं ।
सर्वस्व देकर मिल सकेगा, प्रेम फल सस्ता नहीं ॥

लेखक-केवलाल

मूल्य—प्रेम. सन १९२८.

निकलें ।
निकलें ॥ टेक ॥

निकलें ॥ १ ॥
*

जब प्राण तन से निकलें ॥
दरशन दिखाना प्यारे जब प्राण तन से निकलें ॥ २ ॥
मद लोभ मोह भारी,
गति काम की करारी ।
मिट जांय शत्रु सारे,
जब प्राण तन सेनिकलें ॥
दरशन दिखना प्यारे जब प्राण तन से निकलें ॥ ३ ॥
*　*　*
झड़ती हो प्रेम धारा,
सुख मूल विश्व सारा ।
सब जीव हों सुखारे,
जब प्राणतन से निकलें ॥
दरशन दिखाना प्यारे जब प्राण तन से निकलें ॥ ४ ॥
*　*　*
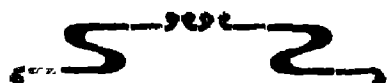
समर्पण

विद्वानों ने खोज खोज बरसों रज छानी ।
नहीं आप की शक्ति किसी ने अबतक जानी ॥
प्रेम देव हैं आप बड़े आधार जगत के ।
चला रहे हैं सिर्फ आप सब कार जगत के ॥
व्यापे चराचर में प्रभो सब को चखाया स्वाद है ।
सादर समर्पण आप के यह प्रेम का संवाद है ॥

परिचय

सन्मुख हुआ हूं आपके हे प्रेमियो सुन लीजिये ।
सचमुच ढिटाई है बड़ी लेकिन क्षमा कर दीजिये ॥
यह भेट धरता हूं, चरण में देखिए उन्माद को ।
स्वीकार दिल से कीजिये इस प्रेम के संवाद को ॥ १
संकोच है यह सज्जनों के योग्य मेरा श्रम नहीं ।
दीपक दिखाना सूर्य को यह मूर्खता भी कम नहीं ॥
कोमल हृदय है प्रेमियों का शुभ यही परिणाम है ।
उत्साह भरना सेवकों में स्वामियों का काम है ॥ २

* * *

अज्ञान होकर भी यही अनुमान मन में कर चुका ।
सेवा समझ कर प्रेम से यह भेट सन्मुख धर चुका ॥
यदि भूल हो इसमें कहीं तो प्रेम से समझाइए ।
हे सज्जनो करके दया इस दास को अपनाइए ॥ ३
यह विश्व को मालूम है सब का यही अनुमान है ।
महिमा अलौकिक प्रेम की कहना नहीं आसान है ॥
पाना पता कुछ प्रेमियों का है नहीं संभव कहीं ।
क्योंकर मिलेगा पार जब, कुछ पार ही उनका नहीं ॥ ४

* * *

सुख शांति मय देवेन्द्र प्यारे प्रेम का अवतार थे ।
मूरति मनोहर प्रेम की अरु प्रेम के भंडार थे ॥
मुख पर प्रकाशित प्रेम की उनमें अलौकिक शक्ति थी ।
श्रद्धा सहित संसार की उनके हिए में भक्ति थी ॥ ५
पड़ती न थी उनके हिए में स्वार्थ की छाया कभी ।
अपने पराए का उन्हें नहिं ध्यान भी आया कभी ॥
किंचित नहीं निष्काम मन में स्वर्ग की भी चाह थी ।
कर्तव्य पथ में प्राण की भी कुछ नहीं परवाह थी ॥ ६

* * *

लवलीन रहकर प्रेम में कर्तव्य से चूके न थे।
केवल पुजारी प्रेम के ऐश्वर्य के भूखे न थे॥
संकट समय पर प्रेमियों से मुख कभी मोड़ा नहीं।
तनपर कड़ाई झेलकर भी प्रेम को तोड़ा नहीं॥ ७
देखा किसीने स्वप्न में भी अगर उनका भेष है।
अंकित अभी तक प्रेम की दिल में निशानी शेष है॥
जिस भांति भृंगी कीट को भृंगी बनाती है सदा।
लघुता मिटाकर ठीक अपने गुण सिखाती है सदा॥ ८

* * *

इस भांति से ही प्रेमियों को प्रेम का परिचय दिया।
अपना अटल आदर्श रख अधिकांश को पावन किया॥
ऐसे अलौकिक पुरुष का अनुकरण किंचित कीजिये।
संक्षिप्त उनकी जीविनी को प्रेम से पढ़ लीजिये॥ ९
हो रही यह जीविनी जगमें प्रकाशित देर से।
पूरी न अब तक होसकी केवल समय के फेर से॥
इस काम का उत्साह मुझको एक विदुषी ने दिया।
है धन्य उनको यह बड़ा अहसान मुझ पर करदिया॥ १०

* * *

कर्तव्य सेवा धर्म का इसमें सरासर स्वाद है।
पढ़िये जरा दिल खोलकर यह प्रेम का संवाद है॥
इस प्रेम के संवाद में सिद्धांत सारा अटल है
पाया अगर कुछ प्रेम तो मेरा परिश्रम सफल है॥ ११

दोहा

लश्कर नया बजार का बासी छेदालाल।
माघ सुदी एकादशी चौरासी की साल॥

* * *

(दोहा)

जब तक नर जीवित रहा, लिया प्रेम का स्वाद ।
प्रेम मूर्ति प्रेमात्मा, श्री देवेन्द्र प्रसाद ॥ १ ॥
तन में, मन में वचन में, रोम रोम में प्रेम ।
अंत समय तक प्रेम का, खूब निबाहा नेम ॥ २ ॥
संवत पैंतालीस का, शुक्ल पक्ष आसोज ।
द्वितिया के दिन जन्म ले, खूब उड़ाई मौज ॥
सतहत्तर की साल में, शुक्ल पक्ष गुरुवार ।
फागुन की थी अष्टमी, छोड़ दिया संसार ॥

देवेन्द्र मिलाप.

कहते थे प्राचीन काल में जिसको सुन्दर मिथिला देश।
छाई हुई छटा मन मोहन, हर लेती थी मन का क्लेश ॥
परिवर्तन होगया आजकल कहलाता है वही विहार ।
गवर्नमेंट के शुभ शासन में दिन पर दिन हो रहा सुधार ॥ १
उसी देश में परम मनोहर आरा नगर निराला है ।
बसा हुआ है नए ढंग से सुन्दर साफ संभाला है ॥
विनय नम्रता आदि गुणों से भरे हुए नर नारी हैं ।
धन वैभव सम्पन्न भक्ति के भली भांति अधिकारी हैं ॥ २

* * *

इसी नगर में एक जैन कुल--भूषण चतुर गुणों की खान ।
नाम सुपार्श्वदास शुभ उनका होन हार थे परमसुजान ॥
सरल स्वभाव प्रेम से पूरित, दीनों का दुख हरते थे ।
शत्रुमित्र सब हरदम उनकी बहुत बड़ाई करते थे ॥ ३
धन वैभव सम्पन्न सदन में प्यारी पत्नी थी सुखमूल ।
मरजी के मानिन्द हमेशा रहती थी उनके अनुकूल ॥
कर्तव्यों में लीन सर्वदा सुखसे समय बिताते थे ।
दम्पति धर्म नमूना बनकर दुनियां को दिखलाते थे ॥ ४

* * *

परम भाग्य शाली सज्जन थे इनके घर में बड़े कुमार ।
श्री देवेन्द्रप्रसाद प्रेम के प्रकट हुए मानो अवतार ॥
विश्व प्रेम का खूब जिन्होंने आदर सहित प्रचार किया ।
सूखे हुए दिलों के अंदर बाग प्रेम का खिला दिया ॥ ५
कलहकारियों को बरजोरी प्रेम परस्पर सिखा दिया ।
प्रेम शक्ति से पाषाणों को मोम बना कर दिखा दिया ॥
इसी लोक में स्वर्ग लोक को रचने का उपदेश किया ।
प्रेम और कर्तव्य कर्म में जीवन अपना शेष किया ॥ ६

शुभ संवत उन्नीस सैकडा ऊपर पैंतालीस किया ।
शुक्ल पक्ष आसौज मास में द्वितिया के दिन जन्म लिया ॥
परम मनोहर समय सुहावन पावन शरद सुहाई थी ।
हरे हरे वृक्षों की शोभा जहां तहां पर छाई थी ॥ ७
शीतल मधुर मनोहर सुन्दर विमल जलाशय भरे हुए ।
रंग विरंगे फूल सुशोभित बन उपवन सब हरे हुए ॥
पकी हुई थीं कृषी देख कर कृषक परम सुख पाते थे ।
धनी और कंगाल स्वभाविक परमानन्द मनाते थे ॥ ८

* * *

निर्मल नील गगन भूमंडल खूब प्रकृति ने सजा दिया ।
ऐसे समय हमारे प्यारे प्रेमी जी ने जन्म लिया ॥
हुआ समय अनुकूल जगत में पडने लगी प्रेम बौछार ।
रोग शोक विघ्नों से रक्षित सुख में था सारा परिवार ॥ ९
प्रेमी जी के जन्म समय पर सबको अति आनन्द हुआ ।
द्वितिया के दिन मनो मनोहर प्रकट शरद का चन्द हुआ ॥
शुभ लक्षण युत परम प्रेम मय सरल स्वभाविक काया थी ।
शिशु पन से ही अंग अंग पर उत्तम गुण की छाया थी ॥१०

* * *

प्रमुदित खिले हुए चहरे पर कभी न देखा गया विषाद ।
देव प्रसाद जानकर सबने नाम धरा देवेन्द्र प्रसाद ॥
भोली भोली सूरत प्यारी मन आकर्षित करती थी ।
प्रेम लपेटी अट पट वाणी सबको हरषित करती थी ॥ ११
पडे हुए पलने में सुख से शिशु क्रीडा दिखलाते थे ।
प्रेम समक्ष हरएक व्यक्ति के पास प्रेम से जाते थे ॥
क्षुधा सताने पर भी अक्सर नहीं देर तक रोते थे ।
समय समय पर ही पय पीकर समय २ पर सोते थे ॥ १२

* * *

हंसते थे हर समय किलक कर अंग सुडौल हिलाते थे।
रहते थे आरोग्य हमेशा रोग दूर हट जाते थे॥
प्रेम प्रकाश विलास देख कर सुख पैदा होजाता था।
देख देख शिशु पन की क्रीडा सब परिवार सिहाता था॥ १३
इसी समय पर विघ्न हुआ यह सब का हृदय दुखाने का।
नियम नहीं है कहीं जगत में समय बराबर जाने का॥
बड़ा भंयकर सब लोगों को सहना पडा अचानक शोक।
जलमें डूब पिता जी उनके असमय चले गये परलोक॥ १४

* * *

किसी समय यह उच्च घराना धन दौलत में था भरपूर।
धर्म और कर्तव्य कर्म में दूर दूर तक था मशहूर॥
अब तो इसी कुलीन वंश का केवल रहा नामही शेष।
तपते हुए प्रताप सूर्य ने अस्ताचल में किया प्रवेश॥ १५
जब कोई मुस्तैद आदमी रहा नहीं करने को काम।
भवसागर में कठिनाई से मिला नहीं बिलकुल विश्राम॥
पाई नहीं थाह विघ्नों की बहुत विचारी छली गई।
माता जी तब बाल बालिका लेकर पीहर चली गई॥ १६

* * *

आरा में ही पीहर उनका वैभवशाली है परिवार।
सरल स्वभाविक माता जी को करते हैं सब दिल से प्यार॥
नहीं द्वेष रखती थीं दिलमें मीठी बातें कहती थीं।
इसी सबब से पहिले अकसर अधिक वहीं पर रहती थीं॥ १७
पहिले से इस वक्त और भी आदर करके लिया गया।
कठिनाई के समय शोक में अतिशय धीरज दिया गया॥
जीवन के आरम्भ काल में ऐसा विघ्न विशेष हुआ।
शिशु-पन प्यारे प्रेमीजी का मामा के घर शेष हुआ॥ १८

* * *

मामा का भी परम प्रतिष्ठित सब से बडा घराना है ।
धन दौलत से भरा हुआ घर सुधरा हुआ जमाना है ॥
शिशुपन से बालकपन आया दिन २ बढने लगा प्रमोद ।
लेते थे सब लोग बलैयां देख देखकर बाल विनोद ॥ १९
अंगसुडौल कमल से कर पद परम सुहावन नाभि गभीर ।
चन्द्रकला की भांति मनोहर दिन २ बढने लगा शरीर ॥
भृकुटी विकट मनोहर लोचन गाल गुलाबी उन्नत भाल ।
फैला हुआ सुभग आनन पर घुंघराली अलकों का जाल ॥ २०

*　　　*　　　*

भोले मुखसे मीठी बातें साफ सुनाना सीख लिया ।
गिरते पडते हुए अंत में दौड लगाना सीख लिया ॥
बारे बूढे सब लोगों से नेह लगाना शुरू किया ।
बालक पनके खेल दिखा कर प्रेम जगाना शुरू किया ॥ २१
सुख से भरे शांति के मंदिर मन्द मन्द मुसकाते थे ।
परम प्रेम की मूर्ति मनोहर साफ नजर में आते थे ॥
कुलमें प्रकट सपूत पूत के पैर पालने दिखते हैं ।
होनहार बिरवों के चिकने पत्ते पंडित लिखते हैं ॥ २२

*　　　*　　　*

प्रेमी जी की प्रभा देखकर सब मोहित हो जाते थे ।
बालक पन के आसारों से होनहार बतलाते थे ॥
बयो वृद्धजन प्रमुदित होकर मनके भाव परखते थे ।
प्रेमी जी के सुन्दर मुख पर सद्गुण साफ झलकते थे ॥ २३
मन मोहन सौन्दर्य प्रभा से अनायास मन हरते थे ।
सरल स्वभाव स्वभाविक गुणसे सब को शीतल करते थे ॥
सुखद सुधाकर सरिस बदन से सुधा बरसता रहता था ।
नहीं प्यास बुझती थी सबका हृदय तरसता रहता था ॥ २४

*　　　*　　　*

क्रीडा करते हुए अनेकों सुखके साथ विचरते थे।
खेल खेलते हुए परस्पर झगड़ा कभी न करते थे॥
हार जीत में बालक सारे कडे शब्द कहलेते थे।
करते थे कुछ नहीं शिकायत चुपहोकर सहलेते थे॥ २५
क्षमा लघुन पर प्रीति परस्पर वृद्धजनों का आदर भाव।
प्रेमी जी का बालकपन से पडा हुआ था यही स्वभाव॥
गोरे गोरे भोले मुख का भाषण अधिक सुहाता था।
हट करना या मचल मचल कर रोना उन्हे न आताथा॥ २६

* * *

बचपन से ही मतलब अपना थोडे में समझाते थे।
सार रहित बातों को बहुधा मुख पर कभी न लाते थे॥
खेल कूंद में कमजोरों पर बडी दया दिखलाते थे।
अक्सर अपनी हार बताकर सबका मान बढाते थे॥ २७
गाली सुनकर भी बदले में गाली नहीं सुनाते थे।
झूठ मूठ भी कभी किसी के दिल को नहीं दुखाते थे॥
खाने पीने की चीजों में मन को नहीं लगाते थे।
दूध भात या मन माने फल नियत समय पर खाते थे॥ २८

* * *

मीठे अधिक तामसी भोजन नहीं पेट में भरते थे।
किसी चीजके लिये किसी से कभी नहीं हठ करते थे॥
भोले पन से कडे दिलों में नरम जगह करलेते थे।
रोते हुए आदमी केवल बातों से हंस देते थे॥ २९
लग्न शोधकर प्रेमी जी का धूम धाम से व्याह हुआ।
हुई खुशी में खुशी और भी सबको अति उत्साह हुआ॥
इसी तरह से महा मोद में बालकपन भी शेष किया।
आरा जिला पाठशाला में इसके बाद प्रवेश किया॥ ३०

* * *

पगे हुए पिछले जन्मों के प्रेम रूप बन आए थे।
प्रेमी जी तो दया प्रेम के संस्कार ही लाए थे॥
इसी सबब से अल्प आयुमें अपना बहुत सुधार किया।
दया प्रेम का शाला में भी जाकर खूब प्रचार किया॥ ३१
सहपाठी मित्रों की ममता पलभर नहीं बिसरते थे।
दीन बालकों पर तो हर दम प्राण निछावर करते थे॥
प्रेम मग्न होकर हरबालक भाव निरखता रहता था।
प्रेमी जी का प्रेम सरोवर उमड उमड कर वहता था॥ ३२

* * *

भक्ति प्रेम इत्यादि गुणों पर शिक्षक बहुत सिहाते थे।
शिक्षा दायक सरल मनोहर दिलसे पाठ पढाते थे॥
गुरु समझ कर प्रेमी जी भी अतिशय आदर करते थे।
पढे हुए हरएक शब्द को फौरन दिल में धरते थे॥ ३३
नहीं कडाई हुई जरा भी पल पल प्रेम विलास हुए।
ठीक समय पर उन्नति करके एंट्रेंस में पास हुए॥
गुरु लोगों को हर्षित करके गये बनारस काशी धाम।
सैंट्रल हिन्दू कालिज जाकर दर्ज कराया अपना नाम॥ ३४

* * *

कालिज में भरती होने पर इल्मी उन्नति शेष हुई।
भक्ति प्रेम सेवा करने की उन्नति और विशेष हुई॥
प्रेम सरोबर में तर होकर अक्षय सुख में फूल गए।
पढने लिखने की क्या गिनती अपने को भी भूल गये॥ ३५
नर जीवन के लिये प्रेम ही कल्प वृक्ष की छाया है।
विद्वानों ने प्रेम शक्ति को सबसे बडा बताया है॥
जप तप योग यज्ञ कर्मादिक जो जो जग का नाता है।
प्रेम छका उन्मत्त हुआ मन फिर क्या कुछ भी भाता है ३६

* * *

अर्थ धर्म कामादिक सुख से दशौ दिशा भर सकते हैं।
लेकिन विमल प्रेमकी समता कभी नहीं कर सक्ते हैं॥
प्रेम विवश हो प्रेम शक्ति से विधिने खेल पसारा है।
टिके हुए ब्रह्मांड अनेकों केवल प्रेम सहारा है॥ ३७
चर अरु अचर प्रेम के बल से जगमें जीवित रहते हैं।
ईश्वर प्रेम प्रेम ही ईश्वर ऐसा पंडित कहते हैं॥
पाकर उसी प्रेम मंदिर से अनायास ही प्रेम प्रसाद।
प्रेम मग्न होकर प्रेमी जी क्यों न भूलते तन की याद॥ ३८

* * *

कालिज में भी उसी प्रेम का सुख दायक रस घोल दिया।
सहज स्वभाव समान भाव से प्रेम खजाना खोल दिया॥
जीवन का सुख मूल प्रेम ही जीवन मूरि समान हुआ।
खाते पीते सोते जगते सब में प्रेम प्रधान हुआ॥ ३९
बाहर भीतर तनमें मन में चाल ढाल में समा गया।
नस नस में रस भिदा प्रेम का बाल बाल में समा गया॥
मनसा वाचा और कर्मणा पावन प्रेम प्रकाश हुआ।
बढ़ा परस्पर प्रेम दिलों में रागद्वेष का नाश हुआ॥ ४०

* * *

उडगण सहित चन्द्र को जैसे सूर्य प्रकाशित करते हैं।
विना परिश्रम अनायास ही अंधकार को हरते हैं॥
इसी तरह से प्रेमी जी का सब पर पूर्ण प्रभाव हुआ।
सत संगी युवकों के दिलमें प्रेम भक्ति का चाव हुआ॥ ४१
सेवा भक्ति प्रेम के बल को भलीभांति से मनन किया।
प्रेम कुटी में सच्चे प्रेमी मित्रों का संगठन किया॥
प्रेम देव के सन्मुख करके मुस्तैदी से कौल करार।
प्रेम मंडली बनी अनोखी सभा सदों की बढ़ी शुमार॥ ४२

* * *

प्रेम देव की प्रबल शक्ति का पाकर भलीभांति आधार ।
प्रेम मंडली प्रेम मंत्र का घर घर करने लगी प्रचार ॥
पश्चिम के विद्वान अरंडल चतुर शिरोमणि नेक मिजाज ।
जिनके नाम और कामों से परिचित है सब सभ्य समाज ४३
कालिज के अनुकूल प्रिंसिपिल भ्रात्र भाव विस्तारक थे ।
समता सहित ब्रह्म विद्या के ज्ञाता प्रेम प्रचारक थे ॥
रुचि अनुसार दिया करते थे सब लडकों को शुभ उपदेश ।
सेवा भक्ति प्रेम ही जिनके जीवन का था लक्ष्य विशेष ॥ ४४

* * *

शिक्षा देते समय एक दिन कर्तव्यों का कह कर हाल ।
मुख्य मुख्य शिष्यों के सन्मुख बडे प्यार से किया सवाल ॥
बतलाओ हे चतुर शिष्य गण जो यह जीवन पाया है ।
तुमने अपने इस जीवन का क्या २ लक्ष्य बनाया है ॥ ४५
बिना लक्ष्य अनमोल जिन्दगी सार हीन होजाती है ।
जैसे भटकी हुई भंवर में नैया चक्कर खाती है ॥
होता नहीं कभी फल दायक अस्थिर जीवन का परिणाम ।
लक्ष्य विहीन पतित पथिकों की मंजिल होती नहीं तमाम ॥४६

* * *

कायम करै लक्ष्य जीवन का तो उन्नति की आशा है
बिना लक्ष्य के तीर फेंकना केवल खेल तमाशा है ॥
सुन कर शिक्षा भरे प्रश्न को आदर सहित जवाब दिया ।
सोच समझ कर सब शिष्यों ने लक्ष्य बताना शुरू किया ॥४७
कोई कहने लगा महाशय मुझे विलायत जाना है ।
विद्वानों में सब से बढ कर ऊंची पदवी पाना है ॥
कहा किसी ने हाथ जोड कर मेरा निश्चित यही विचार ।
बाणिज और व्यौपार करूंगा बनकर मोटा साहूकार ॥ ४८

* * *

कोई बोला सुनिए साहिब मैं अपना प्रण पालूंगा।
सब धर्मों का तत्व समझ कर सच्चा धर्म निकालूंगा॥
कहने लगा तमक कर कोई मेरा लक्ष्य सवाया है।
कृषि विद्या का पंडित होना मेरे मनको भाया है॥ ४९
बडे अदब से कहा किसी ने नहीं सुहाती मुझको ढील।
कानूनी अभ्यास करूंगा बन कर कोई बडा वकील॥
मधुर वचन से बोला कोई मेरा लक्ष्य निराला है।
जन्म भूमि के लिये समर में तन मन धन देडाला है॥ ५०

* * *

सुनिये साहिब कहा किसी ने हिम्मत कभी न हारूंगा।
उपदेशक या सभ्य सुधारक. बनकर देश सुधारूंगा॥
गुरू चरणों में शीश नवाया सादर उठकर सबके बाद।
प्रमुदित करते हुए प्रेम से बोले श्री देवेन्द्र प्रसाद॥ ५१
कुल बातों को अल्प समय के अनुभव से अजमाया है।
विश्व-प्रेम ही इस जीवन का मैंने लक्ष्य बनाया है॥
तन मन किया विश्व को अर्पण शत्रु मित्र का भेद नहीं।
लागी लगन मगन मन मेरा किसी बात का खेद नहीं॥ ५२

* * *

प्यारे का हर कौतुक मुझको प्राणोंसे भीप्यारा है।
रमा हुआ है रोम रोम में केवल प्रेम सहारा है॥
चतुर प्रिंसिपल ने यह सुन कर मन में बहुत विचार किया।
उठकर लगा लिया छाती से बडी देर तक प्यार किया॥ ५३
प्रमुदित करने लगे प्रशंसा हृदय दया-सम्पन्न हुआ।
उसी रोज से उनका उनसे नया भाव उत्पन्न हुआ॥
श्रद्धा सहित अनन्य प्रेम का पाकर परमानन्द विशेष।
समय समय पर प्रेमी जी को करते रहे विविध उपदेश॥ ५४

* * *

बिना रुकावट दिन दिन दूना बढता गया अमित उत्साह ।
शीतल करने लगा विश्व को उमड़ उमड़ कर प्रेम प्रवाह ॥
सभ्य जगत ने प्रेमी जी के कर्तव्यों पर किया विचार ।
होन हार युवकों में सबसे अव्वल होने लगी शुमार ॥ ५५
विद्या बुद्धि परिश्रम साहस बल का वेग अथाह हुआ ।
धर्म और साहित्य विषय के अनुभव से उत्साह हुआ ॥
बालकपन के भाव छोड़ कर परिचय युवक समान दिया ।
धीरे धीरे कर्तव्यों के पथ की ओर प्रयान किया ॥ ५६

* * *

अल्प आयु में ही अनुभव से दूर हटाकर विघ्न कड़े ।
दृढ़ होकर कर्तव्य क्षेत्र में तन मन धन से कूद पडे ॥
प्रेमी जी के अविरत श्रम से उन्नति के परिणाम स्वरूप ।
क्रम क्रम होने लगे प्रकाशित शिक्षा प्रद सद ग्रंथ अनूप ॥ ५७
जिनका पूर्ण रूप से परिचय पूरा विवरण व्यौरे वार ।
जान सकेंगे प्यारे पाठक आगे चलकर भली प्रकार ॥
देश प्रेम कर्तव्य शीलता सुन सुन कर सन्मान किया ।
विद्वानों ने ऊंचा आसन आदर सहित प्रदान किया ॥ ५८

* * *

रीझ रीझ कर सभा समाजें देख देख कर पर उपकार ।
करने लगीं प्रेम से स्वागत प्रेमी जी का भली प्रकार ॥
प्रेमी जी भी स्वार्थ छोडकर विघ्न अनेकों सहते थे ।
तन मन धन से सब के हित में हरदम तत्पर रहते थे ॥ ५९
समता सहित सरल चित होकर सबके बीच विचरते थे ।
देह गेह का नेह छोड़ कर सब की उन्नति करते थे ॥
कलकत्ते के विद्वानों ने सुनकर उनकी कीर्ति अपार ।
सर्व धर्म परिषद का मंत्री चुनकर सौंप दिया अधिकार ॥ ६०

* * *

सादर मंत्री का पद पाकर पैदा किया जगत में नाम ।
चतुराई श्रम और योग्यता सहित किया परिषद का नाम ॥
विद्वानों के संग्रह करके शिक्षा दायक विविध विचार ।
अनुपम ग्रंथ प्रकाशित करके दया धर्म का किया विचार ॥ ६१
प्रेम सहित अधिकांश थलोंमें जाकर प्रेम-प्रचार किया ।
मुख्य अहिंसा सर्व धर्म का डंका जगमें बजादिया ॥
ज़ोर दार सिद्धांत बताया विश्व धर्म का लेकर सार ।
बना जहां तक दया प्रेम का खूब जगत में किया प्रचार ॥ ६२

* * *

खोज खोज कर जैन धर्म का मर्म विश्व को बता दिया ।
कुलबातों की विद्वानों ने बिना पक्ष स्वीकार किया ॥
यूरुप के सब देशों ने भी समझा खूब भीतरी मर्म ।
मुक्त कंठ से सब लोगों ने स्वीकृत किया अहिंसा धर्म ॥ ६३
खान पान आराम छोड कर किया परिश्रम आठौयाम ।
ज़ाहिर किया जगत के सन्मुख उपयोगी परिषद का काम ।
इसी तरह कुछ रोज बनारस रहकर किया प्रगट अनुराग ॥
संस्थाओं में जान डालकर प्रेमी जी पुनि गये प्रयाग ॥ ६४

* * *

दर्ज कराया नाम वहां पर छात्रालय में किया निवास ।
नहीं लगाया मन पढने में किया न कोई दर्जा पास ॥
सचमुच उन्हे पुस्तकें रटकर जीवन नहीं बिताना था ।
भक्ति प्रेम का श्रोत बहा कर अक्षय पद को पाना था ॥ ६५
स्वार्थ छोडकर सब लोगों की सेवा दिल से करना था ।
मंगल दायक विश्व प्रेम से सकल विश्व को भरना था ॥
छात्रालय के सब छात्रों में पैदा किया परस्पर प्रेम ।
कलह कुटिलता छोड छोड कर रटने लगे निरंतर प्रेम ॥ ६६

* * *

सब के ऊपर प्रेमी जी कुछ जादू सा कर देते थे ।
शुष्क दिलों को विमल प्रेम से अनायास भर देते थे ॥
छोटे बड़े परस्पर सब में देख देख कर प्रेम अथाह ।
छात्र संघ नामक संस्था को कायम किया सहित उत्साह ॥ ६७
जैन समाज कुरीति निवारण विद्या और धर्म उपदेश ।
स्त्री शिक्षा की उन्नति हो यही संघ का है उद्देश ॥
करता हुआ सर्वदा उन्नति संघ अभी तक जारी है ।
प्रेमी जी के प्रेम भक्ति का प्रेम सहित आभारी है ॥ ६८

* * *

अंकित हैं उपदेश अभी तक सब के दिल में लिखे हुए ।
फिरते हैं लवलीन अनेकों उनके ऊपर बिके हुए ॥
आठौं याम परिश्रम करके खूब संघ का काम किया ।
उन्नत शील बनाया सबको विद्वानों में नाम किया ॥ ६९
एक समय पर छात्रालय का छात्र किसी मन मानी से ।
छत पर से गिर पडा अचानक गफलत में नादानी से ॥
गिरते ही बेहोश चोट से होकर मरणासन्न हुआ ।
दशा देखकर सब के दिल में दया भाव उत्पन्न हुआ ॥ ७०

* * *

कहा प्रिंसिपिल ने लडकों से इसका यही उपाय करो ।
अपने मुख से इसके मुख में चन्द मिनिट तक स्वास भरो ॥
साहस हुआ नहीं लडकों का उसपर दया दिखाने का ।
अपनी स्वास डाल कर केवल उसके प्राण बचाने का ॥ ७१
लगे झांकने इधर उधर को नहीं गया कोई भी पास ।
प्रेमी जी ने आगे बढकर उसके मुखमें छोडी स्वास ॥
उस लडके के प्राण बचाकर वहुत बडा उपकार किया ।
चतुर प्रिंसिपल ने खुश होकर प्रेमी जी को प्यार किया ॥ ७२

* * *

कहा पीठ पर हाथ फेर कर तुम जग के हित कारी हो।
निश्चय जीवन सफल तुम्हारा सुर पुर के अधिकारी हो॥
मिल सकती है इससे बढ़कर सेवाकी क्या अधिक मिसाल।
बड़ा असर होता था सबपर देख देख कर उनका हाल॥ ७३
होकर मुग्ध सरस रसना से शिक्षा मनमें धरते थे।
छोटे बडे प्रेम बश उनका उठकर स्वागत करते थे॥
अडे रहे कर्तव्य क्षेत्र में अपने आप विकाश हुआ।
बिना थकावट श्रम करने का दिन दूना अभ्यास हुआ॥ ७४

* * *

किया समर्पण प्रेम पंथ में छिपा खजाना खोल दिया।
पढना लिखना छोड़ अन्त में घर पर आकर वास किया॥
करते हुए दूर विघ्नों को श्रम साहस को साथ लिया।
कूद पडे दिल खोल समर में तनका होश विसार दिया॥ ७५
कायम किया प्रेम का मंदिर और बखेडा छोड दिया।
प्रेम देव के बने पुजारी सेवा धर्म कबूल किया॥
उड़ने लगा गगन मंडल में बडा विलक्षण काम किया।
साफ तौर से विश्व प्रेम का गहरा झंडा गाड़ दिया॥ ७६

* * *

सारा समय इसी मंदिर की भाव भक्ति में लगा दिया।
अधम स्वार्थ की आहुति देकर परमारथ का काम किया॥
इसी प्रेम मंदिर के अंदर विश्व प्रेम भर पूर हुआ।
उमड़ उमड़ कर प्रबल वेग से दुनियां में मशहूर हुआ॥ ७७
पैदा किए सहायक अपने विद्वानों को अपनाया।
जैन धर्म का तत्व खोज कर भली भांति से दरशाया॥
लिखवा कर सिद्धांत अनेकों जैन धर्म मजबूत किया।
अंग्रेजी में छपा छपा कर सब दुनियां को बता दिया॥ ७८

* * *

अमेरिका इंगलेंड जर्मनी फ्रांस रूस ने जान लिया ।
जैन धर्म का तत्व समझ कर विद्वानों ने मान लिया ॥
पढ पढ कर आदर्श तत्वको दिल में खूब विचार किया ।
भारत के भी विद्वानों ने आदर से स्वीकार किया ॥ ७९
सन्मुख साफ दलीलें रख कर सबका संशय भगा दिया ।
प्रेमी जी के कर्तव्यों ने जैन धर्म को जगा दिया ॥
सेवा धर्म प्रेम की महिमा कर्तव्यों का निर्मल ज्ञान ।
फैला दिया विश्व के भीतर विश्व प्रेम का तत्व महान ॥ ८०

* * *

चुन चुन कर सुन्दर शिक्षा-प्रद भक्ति प्रेम के विमल विचार ।
छपा छपा अनमोल पुस्तकें भली भांति से किया प्रचार ॥
जैन जाति के सुन्दर भूषण जैन धर्म के दृढ़ आधार ।
बढ़ा रहे थे जैन जाति में कर्तव्यों की छटा अपार ॥ ८१
इन बातों में प्यारे पाठक किंचित भी अत्युक्ति नहीं ।
साक्षी रूप देखिये आकर है सारा सामान यहीं ॥
अब तक उनके मित्र याद में घंटों नीर बहाते हैं ।
छोटे बड़े अभी तक उनकी कीर्ति प्रेम से गाते हैं ॥ ८२

* * *

नहीं नजर आता उनका सा अबतक प्रेम प्रभाव कहीं ।
खोज खोज कर मिला नहीं है ऐसा सरल स्वभाव कहीं ॥
मिलते समय प्रेम का सब पर महा मंत्र पढ़ देते थे ।
प्रेम दृष्टि से कड़े दिलों को काबू में कर लेते थे ॥ ८३
उनकी नम्र निवेदन सुन कर कोई कभी न नटता था ।
मीठी बातों का समझाना कभी न दिल से हटता था ॥
उनके सन्मुख छल की बातें कोई कभी न कहता था ।
मंत्र मुग्ध की भांति प्रेम की नजर ताकता रहता था ॥ ८४

* * *

मन के बुरे विकार छोडकर जिसके आगे जाते थे।
मित्रों की तो कौन चलावे पत्थर को पिघलाते थे॥
जब वह अपने कर कमलों से पत्र कहीं लिख देते थे।
पढने वालों की तबियत को बिना दाम लेलेते थे॥ ८५
प्रेम पगे कोमल शब्दों को पढकर नहीं अघाते थे।
दूर दूर के व्यक्ति सहायक अनायास बन जाते थे॥
जातेथे जिस ओर वहीं पर प्रेम बरसने लगता था।
दरशन पाकर सब का सुख से हृदय हरषने लगता था॥ ८६

* * *

जहां बैठते सहज वहां से राग द्वेष खो जाता था।
प्रेम पगा मित्रों का मंडल एक हृदय होजाता था॥
सार हीन नाहक झगडों में शामिल कभी न होते थे।
करते हुए नियम का पालन नहीं समय को खोते थे॥ ८७
शारीरिक श्रम और मानसिक काम खूब कर सकते थे।
बढा हुआ था चाव इसी से नहीं जरा भी थकते थे॥
झरने नदी बाग वन सुन्दर उनको बहुत सुहाते थे।
सहज प्रकृति का दृश्य देखने उद्यानों में जाते थे॥ ८८

* * *

सूर्य निकलता हुआ देखकर मन माना सुख पाते थे।
कसरत करते हुए सबेरे कोसों दौड लगाते थे॥
नित्य नियम से फुरसत पाकर काम शुरू कर देते थे॥
सब से प्रथम प्रेम मंदिर की डांक हाथ में लेते थे॥ ८९
अगर डांक में देर हुई तो जरा नहीं कल पाते थे।
पोस्टमैन के इंतिजार में बडे व्यग्र हो जाते थे॥
डांक खोल कर सब से पहिले वही काम निवटाते थे।
उत्तर देकर कुल पत्रों को फाइल में पहुंचाते थे॥ ९०

* * *

शिक्षा प्रद सुन्दर लेखों को बडे यत्न से धरते थे।
लेखक और चतुर कवियों का अतिशय आदर करते थे॥
सुन्दर लेख रसीली कविता जहां कहीं सुन पाते थे।
दौड धूप तकलीफें सहकर निश्चय उनको लाते थे। ९१
ग्रंथ प्रकाशन कला बडी ही अद्‌भुत और निराली थी।
सहज साफ सुन्दरता सब का हृदय मोहने वाली थी॥
शुद्ध साफ सौन्दर्य देख कर खुश होकर खिल जाते थे।
इसी लिये हरएक चीज में सुन्दता दिखलाते थे॥ ९२

* * *

बिमल मनोहर सुन्दरता के प्रेमी और उपासक थे।
इसी लिये इंडियन प्रेस पर खास तौर से आशक थे॥
मंदिर की अधिकांश पुस्तकें इसी प्रेम में छपती थीं।
जिनके लिये अनेकों आंखें राह हमेशा तकती थीं॥ ९३
कभी मसौदा नहीं भेजते स्वयं प्रेस में जाते थे।
ब्लाक और कंपोज छपाई अपने आप बनाते थे॥
बढिया पेपर कवर मनोहर रंग बिरंगी स्याही से।
शुद्ध छपाई जिल्द बंधाई होता काम सफाई से॥ ९४

* * *

ध्यान लगाकर बारीकी से प्रूफ देखते जाते थे।
हृस्व दीर्घ की कौन चलावे कॉमा तक बतलाते थे॥
कई दिनों का काम सामने घंटों में करवाते थे।
अपने साथ बनाकर बंडल छपी पुस्तकें लाते थे॥ ९५
लाकर उन्हें प्रेम मंदिर में सजा सजा कर धरते थे।
सेवक सखा अनेक किसी पर नहीं भरोसा करते थे॥
उचित रीति से बना पारसल लेबिल साफ लगाते थे।
दर्ज रजिस्टर करके उनको फौरन ही भिजवाते थे॥ ९६

* * *

जब तक सारा काम समय पर ठीक नहीं होजाता था।
तब तक उनको कलम रोकना बिलकुल नहीं सुहाता था॥
मंदिर की चीजों का उनको खूब सजाना आता था।
लेते समय अंधेरे में भी हाथ वहीं पर आता था॥ ९७
कड़ा परिश्रम करने पर भी सुस्ती उन्हें न आती थी।
होकर के उत्साहित तबियत अधिक अधिक हुलसाती थी॥
अपना काम समय पर करके औरों का करवाते थे।
उलझे हुए काम मित्रों के खुद जाकर सुलझाते थे॥ ९८

* * *

बाहर के प्रेमी मित्रों के पत्र बहुत से आते थे।
सब के लिये यथो चित उत्तर ठीक समय पर जाते थे॥
रखते थे सन्तुष्ट प्रेम से सब का संकट हरते थे।
स्थानी संस्थाओं का भी काम खुशी से करते थे॥ ९९
एक प्रसिद्ध रईस यहां पर जैन धर्म अनुरागी थे।
धन वैभव सम्पन्न सुकर्मी असत कर्म के त्यागी थे॥
देवकुमार नाम शुभ उनका गुण के बड़े सहायक थे।
बुद्धिमान गुणवान सुशिक्षित जैन जाति के नायक थे। १००

* * *

धर्म प्रचार जाति के हित की सुन्दर युक्ति निकाली थी।
धन देकर सरस्वती भवन की नीव उन्होंने डाली थी॥
संग्रह किये ग्रंथ बहुतेरे धन की थी कुछ कमी नहीं।
बिना कार्यकर्ता के लेकिन कार्यप्रणाली जमी नहीं॥ १
प्रेमी जी ने उसी भवन में काम बहुतसा करवाया।
"जैनधर्म सिद्धांत भवन" यह नाम बदल कर धरवाया॥
उत्साही मित्रों को लेकर काम चलाया हाथों हाथ।
हुए सहायक सभ्य अनेकों दिलसे हमदर्दी के साथ॥ २

* * *

आदर सहित निमंत्रण देकर विद्वानों को बुलवाया।
धूम धाम से उत्सव करके उद्देशों को समझाया॥
इसी समय स्त्री शिक्षा का बहुत बड़ा उपकार किया।
महिला शिल्प प्रदर्शन करके नया नमूना दिखा दिया॥ ३
जैन जाति ने हर्षित होकर प्रेम सहित सन्मान किया।
सादर उनको जैन सभा ने कंचन पदक प्रदान किया॥
इस उद्योग और रचना पर बार बार बलिहारी है।
प्रेमी जी की चतुराई को चरचा अब तक जारी है॥ ४

* * *

तब से यह सिद्धांत भवन भी मुस्तैदी से चलता है।
उन्नति करके उद्देशों में पाई खूब सफलता है॥
निर्मल बाबू ने धन देकर बनवाया है भवन विशाल।
सजे हुए हैं ग्रंथ वहांपर लिखा हुआ है सब का हाल॥ ५
बुद्धिमान हैं रक्षक उसके ठीक ठीक चलता है काम।
मिलती हैं पुस्तकें समय पर मुस्तैदी का है परिणाम॥
प्रेमी जी हर एक काममें उत्साहित हो जाते थे।
लगजाती थी लगन इसी से खूब सफल ता पाते थे॥ ६

* * *

इसी समय पर उनकी प्यारी पत्नी का देहांत हुआ।
लेकिन उनका प्रेम पगा मन बिलकुल नहीं अशान्त हुआ॥
इस पत्नी से पैदा होकर बालक कोई नहीं जिया।
इसी सबब से घर वालों ने ब्याह दूसरा ठीक किया॥ ७
प्रेमी जी ने मना किया था नहीं ब्याह की थी परवाह।
घरवालों ने किया आग्रह बढ़ी हुई थी सब को चाह॥
माता का प्रस्ताव प्रेमके बशमें उनसे टला नहीं।
बन्धन हुआ जबरदस्ती से कुछ भी चारा चला नहीं॥ ८

* * *

पाणि ग्रहण होगया मगर कुछ हुआ न उनको हर्ष विषाद।
करने लगे काम सब अपना कर्तव्यों की करके याद॥
प्रेमी जी ने धर्म कर्म के खास तत्व को जाना था।
आगे चलकर दो कामों को करना मन में ठाना था॥ ९
लिखना था भरपूर एकतो जैनधर्म का कुल इतिहास।
सुन्दर साफ चित्र हों जिसमें समय समय की घटना खास॥
इसके लिये परिश्रम करके साधन संग्रह करते थे।
घूम घूम कर देश देश से चीजें लाकर धरते थे॥ ११०

* * *

दार्जिलिंग शिमला मंसूरी गिरि शिखरों पर धाए थे।
गवर्नमेंट की मंजूरी से चित्र अनेकों लाए थे॥
नगर गांव या घोर बनों में जहां ठिकाना पाया था।
दूर दूर तक पैदल चलकर घर घर शोध लगाया था॥ ११
जाजाकर प्राचीन थलों में धन बहुतेरा दान दिया।
रुचि अनुसार ग्रंथ लिखने को खूब मसाला जमा किया॥
समय फेर से लेकिन उनका पूरा हुआ नहीं यह काम।
जोड़ी हुई सकल सामग्री पड़ी पड़ी होगई तमाम॥ १२

* * *

उनके पीछे घर वालों ने किया जरा भी यत्न नहीं।
बिना जौहरी और किसी पर कभी ठहरता रत्न नहीं॥
काम दूसरा यह था उनके मनमें धर्म कमाने का।
महिलाओं के लिये कहीं पर आश्रम एक बनाने का॥ १३
जिसमें रहकर जैन जाति का नारी मंडल सुधर सकै।
शिक्षा पाकर कर्मक्षेत्र में मुस्तैदी से उतर सकै॥
बिना यत्न के तेजहीन हो नारी रत्न अमूल्य बड़े।
सनेहुए अज्ञानधूल में जहां तहां बेकार पड़े॥ १४

* * *

विद्या की कुछ रोज सानपर चढ़ कर अपना नाम करें।
विदुषी बनकर धर्म कर्म से जैन जाति का काम करें॥
इस आश्रम के लिये उन्होंने निश्चित विविध विचार किए।
मित्रों को उत्साहित करके नए नियम तय्यार किए॥ १५
किंतु रहा जैसे का तैसा संग्रह किया हुआ सामान।
पूरा हुआ नहीं जीवन में साथ गया उनके अरमान॥
उनके पीछे अल्प काल मे ही पूरा यह काम हुआ।
सच्चे दिलकी लगी लगन का शीघ्र प्रकट परिणाम हुआ १६

* * *

श्रीमती गुणवती पंडिता चंदाबाई परम प्रवीन।
जैन जाति की महिला भूषण धर्म कर्म में हैं लवलीन॥
बुद्धिमती आरूढ़ धर्म पर परम शिक्षिता हृदय उदार।
सरल स्वभाव मधुर प्रिय भाषण दया प्रेम की है भंडार॥१७
महिलाओं के लिये उन्होंने पालन यह कर्तव्य किया।
जैन जाति में आगे बढ़कर इस आश्रम का भार लिया॥
दीन हीन नारी मंडल को अपने हाथों सेती है।
बिता रही हैं सादा जीवन धन आश्रन को देती हैं॥ १८

* * *

निर्मल बाबू ने भी अपने कर्तव्यों को पाला है।
कोठी सहित बगीचा सुन्दर आश्रम को देडाला है॥
कोठी के नजदीक और भी इंतिजाम करवाया है।
छात्रालय बनवाकर उसमें कुल सामान सजाया है॥ १९
निर्मल बाबू के उत्साही बहुत करीबी रिश्तेदार।
धन भंडार गुणों के ग्राहक है शुभ नाम धनेन्द्रकुमार॥
श्रद्धा भक्ति सहित आश्रम में आकर धर्म कमाया है।
छात्रालय से एक अलहदा विद्यालय बनवाया है॥ १२०

* * *

देकर गहरी नीव बना है विद्यालय का भवन विशाल।
हरा भरा है बाग मनोहर जिसमें रहता सदा सुकाल॥
धनूपुरा आरा में जाहिर सबको इस आश्रम का नाम।
शिक्षा दायक जैन धर्म का कुंज जैन बाला बिश्राम॥ २१
रह कर यहीं स्वयं बाई जी देख भाल सब करती हैं।
जिन की प्रेमछत्र छाया में सब बालिका विचरती हैं॥
इसमें चतुर सतारा सुन्दरि मैनेज़र कहलाती हैं।
खान पान रहने का सारा इंतिजाम कर वाती हैं॥ २२

* * *

कृष्णा देवी परम शिक्षिना हित से पाठ पढ़ाती हैं।
कस्तूरी बाई दर्जे में उन्नति खूब कराती हैं॥
प्रभावती बाई जी सब को सुगम पंथ दिखलाती हैं।
शिल्प कला की शिक्षा देकर धर्म कर्म सिखलाती हैं॥ २३
कुछ घंटों के लिये नियम से रोज समय पर आते हैं।
संस्कृत के पाठ मनोहर पंडित जी सिखलाते हैं॥
नौकर चाकर सब उत्साही फौरन हुक्म बजाते हैं।
इस आश्रम का काम देख कर दर्शक खुश होजाते हैं॥ २४

* * *

बिधवा और बालिका मिलकर कुल दर्जो में हैं पैंतीस।
बाई जी के इंतिजाम से मिली सफलता बिश्वे बीस॥
दूर दूर देशों से महिला आकर दाखिल होती हैं।
शिक्षा पाकर शुभ कर्मों का बीज अभी से बोती हैं॥ २५
धर्म कर्म शिक्षा का साधन बल दायक हो जाता है।
जिससे उनका निष्फल जीवन फल दायक होजाता है॥
प्रेमो जी की शुद्ध आत्मा स्वर्ग लोक से आती है।
इस आश्रम का काम देखकर प्रेम मग्न होजाती है॥ २६

* * *

अपने जीवन को प्रेमी जी उपकारों में बिता गए ।
कर्तव्यों की शिक्षा देकर जैनजाति को चिता गये ॥
बतला सकें अधिक क्या लिख कर नहीं लिखी अब जाती है ।
उनके जीवन की महिमा क्या सहज समझ में आती है ॥ २७
अचल अटल सिद्धांत किसी से कभी नहीं हिल सकता है ।
प्रेमी जी के गहरे दिल का पार नहीं मिल सकता है ॥
देखी गई सामने जो कुछ और जहां तक जानी है ।
मुख्य मुख्य जीवन की घटना मति अनुसार बखानी है २८

* * *

अब आगे के लिये बड़ा ही दिल को सख्त बनाते हैं ।
अन्त समय की दुखमय घटना थोड़े में बतलाते हैं ॥
प्रेमीजी ने एक समय पर करने को जग का उपकार ।
महिलाओं की महिमा सुन्दर पुस्तक करडाली तय्यार ॥२९
विद्वानों के वाक्य छांट कर यश की नदी बहाई थी ।
निश्चित करके महिलाओं की कुल महिमा बतलाई थी ॥
सुन्दर साफ इसी पुस्तक को छपवाने का था अरमान ।
छपी नहीं इंडियन प्रेस में कलकत्ते को किया पयान ॥ १३०

* * *

निश्चित किया वहां पर जाकर छपवाने का बर्मन प्रेस ।
दिया आर्डर शीघ्र वहां पर करने लगे विविध उपदेश ॥
पांच रोज तक किया परिश्रम खान पान का रहा न होश ।
पुस्तक जल्दी छप जाने का बढ़ा हुआ था मन में जोश ॥ ३१
करते रहे विचार रातमें दिन में सारा काम किया ।
पुस्तक छपने की जल्दी में जरा नहीं विश्राम किया ॥
कई रोज मिहनत करने से होंने लगा बदन बीमार ।
नहीं रही ताकत उठने की खूब जोर से चढ़ा बुखार ॥ ३२

* * *

सहते रहे भंयकर पीडा बिलकुल नहीं विषाद किया।
घर वालों को बीमारी का जरा नहीं संवाद दिया॥
छटे रोज मालूम हुआ कुछ कठिन शीतला का आसार।
बढ़ती हुई देख बीमारी घर वालों को भेजा तार॥ ३३
घर वालों ने जल्दी आकर प्रेमी जी का देखा हाल।
बेदर्दी से सता रहा था उन्हें भंयकर काल कराल॥
अंग अंग में पीड़ा उनको कड़ी व्यथा पहुंचाती थी।
देख देख कर घर वालों की व्याकुलता बढ़ जाती थी॥ ३४

* * *

आये वैद्य डाक्टर सारे उनका रोग हटाने को'
किये गए उपचार अनेकों पीड़ा दूर हटाने को॥
बढ़ती गई मगर बीमारी नहीं जरा भी रोग घटा।
बढ़ा हुआ प्रारब्ध कर्म का नहीं किसी से भार हटा॥ ३५
नहीं तंत मिलसका अंत में सन्निपात का कोप हुआ।
बढ़ने लगी अधिक बेहोशी ज्ञान शक्ति का लोप हुआ॥
बेहोशी में भी अपने नहीं लक्ष्य से हटते थे।
पुस्तक और प्रकाशन की ही चरचा मुखसे रटते थे॥ ३६

* * *

क्रम क्रम से प्रेमी मित्रों का नाम बराबर लेते थे।
व्याकुलता में भी तो अपनी प्रेम परीक्षा देते थे॥
करुणा जनक दृश्य का मुख से अकथनीय है हाल तमाम।
जीवन और मृत्यु दोनों का महाभयंकर था संग्राम॥ ३७
व्याकुल प्राण त्राण पाने को तड़प तड़प रह जाते थे।
पलभर निठुर मौत के मुखसे नहीं छूटने पाते थे॥
शिथिल इन्द्रियां हुई अन्त में शक्ति हीन होगया शरीर।
देख रहे सब वैद्य डाक्टर चली नहीं कोई तदवीर॥ ३८

* * *

बैठे रहे पास हितकारी मित्र और प्यारा परिवार ।
रोने के अतिरिक्त किसी से हुआ नहीं कोई उपकार ॥
मोड़लिया मुख आखिर सबसे दुनियां को नश्वर पहिचान ।
स्वर्ग लोक को प्रेमीजी के प्राणों ने कर दिया पयान ॥ ३९
शुक्ल पक्ष गुरुवार अष्टमी फागुन सतहत्तर की साल ।
संध्या समय बसंत काल में दुख दायक हो गया अकाल ॥
होनहार इकतीस वर्ष का युवा काल की भेट हुआ ।
नहीं पड़ा मालूम कौन से पापों का आखेट हुआ ॥ ४०

* * *

ऐसी दशा देख कर उनकी घरवालों ने किया विलाप ।
छूट गया धीरज मित्रों का सब का हुआ अधिक संताप ॥
जननी और बालिका पत्नी रोरो लगी पीटने माथ ।
बिलकुल हो फट गया कलेजा दुनियां में होगई अनाथ ॥ ४१
कौन बंधावै धीर आज वह धीर धरैया चला गया ।
क्यों कर होगी पार हाय अब नावखिवैया चला गया ॥
माके सन्मुख लाल अचानक हाय काल ने चुरा लिया ।
पता नहीं क्यों प्रेमलता पर ऐसा वज्र प्रहार किया ॥ ४२

* * *

हाय कौनसी निठुर हवाने बिना समय अन्याय किया ।
जैन जाति का परम प्रकाशित दीपक पल में बुझा दिया ॥
कुटिल काल ने बाण तान कर बेदर्दी से छोड़ दिया ।
होन हार बलवान सुभट का अनायास बल तोड़ दिया ॥ ४३
घोर निराशा का आशा के कनक कोट पर गिरा पहाड़ ।
सींचो हुई चतुर माली की फुलवाड़ी हो गई उजाड़ ॥
प्रेमी होकर हाय प्रेम से केवट मुखड़ा मोड़ गया ।
बहती हुई प्रेम की नैया बीच धार में छोड़ गया ॥ ४४

* * *

टूट गया अब हाय! अचानक जैन धर्म का खम्भ नया।
प्रेम और साहित्य कोष का रत्न कीमती चला गया!॥
निकल सकेगा नहीं सहज में शूल दिलों में गड़ा हुआ।
पक्षी तो उड़गया कहीं को खाली पिंजर पड़ा हुआ!॥ ४५
होगी नहीं पूर्ति अब इसकी सहज नहीं दुख जावेगा।
देशभक्त के लिये देश सब प्रेम नीर बरसावेगा॥
पल भर पहिले आशाओं की जिसके दिल में भरी उमंग।
पड़ा वही निर्जीव भूमि पर हुए मनोरथ सारे भंग!॥ ४६

* * *

नश्वर देह पड़ी मुरझाकर बिलकुल तेज विहीन हुई।
पूर्ण प्रकाशित दिव्य आत्मा दिव्य ज्योति में लीन हुई॥
अल्प काल में ही भावी वश कुटिल काल का फेर हुआ।
कंचन के मानिन्द प्रकाशित वदन राख का ढेर हुआ॥ ४७
मिटती नहीं किसी से हरगिज होती है भावी बलवान।
अंतिम क्रिया कर्म सब करके घर वाले आगये मकान॥
मित्रों ने भी आकर दुख में हम दर्दी से योग दिया।
देश देश के अखबारों ने अतिशय शोक प्रकाश किया!॥ ४८

* * *

जिन मित्रों को आदर करके प्रेम सहित अपनाते थे।
मुरझा हुआ कमल मुख जिनका सूर्य समान खिलाते थे॥
प्रेमीजी की बिरह व्यथा में मिली न उनको शान्ति कहीं।
चिन्ता के अतिरिक्त हाथ में और यत्न कुछ रहा नहीं॥ ४९
केवल रही घसीटन बाकी सांप सरासर निकल गया।
हुआ रंग बदरंग प्रेम का पांसा बिलकुल बदल गया॥
चलती हुई प्रेम की गाड़ी बीच राह में टूट गई।
उड़ती हुई पतंग प्रेम की डोर हाथ से छूट गई॥ ५०

* * *

प्रेम पुजारी विना प्रेम का मंदिर भी सुन सान हुआ।
दुनियां के अधिकांश थलों में इसका शोक महान हुआ॥
जिस मंदिर में मंगल दायक पावन प्रेम बरसता था।
पत्थर का भी हृदय प्रेम से जाकर जहां हरषता था॥ ५१
ठौर ठौर पर खुली हुई थी सुन्दरता की खान जहां।
दीवारों पर वाक्य प्रेम के जाहिर प्रेम प्रमाण जहां॥
सजी हुई थीं प्रेम पुस्तकें होता प्रेम बखान जहां।
होता था नित नया प्रेम से मित्रों का सन्मान जहां॥ ५२

* * *

आज उसी स्वर्गीय भवन में काग बसेरा करते हैं।
जमी हुई है धूल मौज से कीट पतंग विचरते हैं॥
सुन्दर साफ वहां की चीजें मलिन दिखाई पड़ती हैं।
नहीं पूछता उनको कोई पड़ी पड़ी ही सड़ती हैं!॥ ५३
पुस्तक और कीमती चीजें लगे हुए हैं सब के ढेर।
कंचन मिला हुआ माटी में ऐसा बिकट समय का फेर॥
प्रेमीजी का प्यारा मंदिर कंटक बन करडाला है।
कोई यत्न काम चलने का अबतक नहीं निकाला है॥ ५४

* * *

खुलते नहीं प्रेम मंदिर में पड़े हुए अब ताले हैं।
सुना गया है मामा उनके सत्व बेचने वाले हैं॥
मिला नहीं कोई भी ग्राहक नहीं किसी ने सत्वलिया।
चलता हुआ काम आगे को हट करके बरबाद किया॥ ५५
अब हम आखिर इस घटना को होन हार पर धरते हैं।
प्रेमी जी के लिये प्रेम से यही निवेदन करते हैं॥
रहें प्रेम में मान सर्वदा विमल प्रेम का बाग खिलै।
रहै आतमा सुखी स्वर्ग में घरवालों को शान्ति मिले॥ १५६

* * *

मित्र-वियोग

भाता नहीं बिलकुल जगत, अबतो तुम्हारे शोक में।
तजकर हमें हे मित्र! तुम, जाकर बसे किस लोक में॥
सोचा नहीं तुमने जरा, कैसा अनौखा प्यार था।
कुछ समय पहिले तुम्हारा, क्या यही इकरार था॥ १
इस प्रेम के सबन्ध में जो, वायदे हमसे किए।
उपदेश करते थे हमें, हरदम निभाने के लिए॥
क्या नहीं उस कौल को, पूरा निभाना था तुम्हें।
इस तरह जल्दी हमें क्या, भूल जाना था तुम्हें!॥ २

* * *

चलते समय दिल खोलकर, कुछ भी न मुख से कहगए।
बैठे हुए हमतो तुम्हारी, राह तकते रहगए॥
जाना नहीं था, प्रेम के पथ में हमें आगे बढ़ा।
बे समय मुख मोड़ने का, पाठ कब तुमने पढ़ा॥ ३
बिन मिले हमसे कभी, हे मित्र! तुम रहते न थे।
पलभर हमारे विरह की, किंचित व्यथा सहते न थे॥
अब क्यों निठुर होकर जुदाई, इस तरह अखत्यार की।
सूरत दिखाते भी नही, बातें सुनाकर प्यार की॥ ४

* * *

लखकर हमारी खिन्नता आनन्द कुछ आता न था।
किंचित कभी तुमको हमारा मलिन मुख भाता न था॥
प्रिय प्राण देने को हमारे कष्ट में तय्यार थे।
मुख पर पसीना देखकर, देते रुधिर की धार थे॥ ५
आज हम होकर बिकल, रो २ पछाड़ें खा रहे।
करते हुए करुणा महा, सब भाँति से दुख पारहे॥
हे मित्र! ऐसे कष्ट में भी, क्यों मदद करते नहीं।
दरशन दिखाकर बिरह की दारुन व्यथा हरते नहीं॥ ६

* * *

कुछ तो कहो किस दोष से तुमने बिसारा है हमें।
बिलकुल नहीं-ऐसी निठुरता अब गवारा है हमें॥
सब प्राणियों से प्रेम करना'' मंत्र यह रटते रहे।
तकलीफ सहकर प्रेमियों की चाकरी करते रहे॥ ७
समता सहित दिल खोलकर उपकार भी तुमने किए।
अब क्यों कड़ाई सीखली केवल हमारे ही लिए॥
उस मधुर बाणी से हमें धीरज धराते क्यों नहीं।
सन्तप्त मन के ताप को आकर मिटाते क्यों नहीं॥ ८

* * *

उठकर सबेरे मोद से नित घूमते थे बाग में।
हमको दिखाते थे छटा डूबे हुए अनुराग में॥
साहित्य की चरचा हमें सुन्दर सुनाते थे सदा।
नित नए आनन्द में जीवन बिताते थे तदा॥ ९
अब नहीं लेकिन तुम्हें पिछली दशा का शोक है।
भूले हमारी याद जाकर कौनसा वह लोक है॥
करलिया क्यों हाय तुमने कठिन पत्थर का हिया।
बेदर्द हो इस भांति से हमको भंवर में तज दिया॥ १०

* * *

हम तड़पते हैं पड़े तुमको न कुछ भी ध्यान है।
संसार में क्या प्रेम की ऐसी कड़ी पहिचान है॥
अब जान कर हे मित्र! जगमें प्रेम के परिणाम को।
रटते रहेंगे प्रेम से हरदम तुम्हारे नाम को॥ ११

प्रेम

आनन्द दायक है निराली प्रेम की सुन्दर कथा।
चल रही संसार में चिरकाल से इसकी प्रथा॥
लाखों इसी के स्वाद में लवलीन बिलकुल हो रहे।
लाखों इसी अनुराग में अनमोल जीवन खो रहे॥ १॥
लाखों इसी में मग्न होकर बीज यश का बो गए।
बन गए आदर्श जगमें मुक्त जीवन हो गए॥
पशु और पक्षी भी अनेकों प्रेम में लवलीन हैं।
संसार के सब जीव केवल प्रेम के आधीन हैं॥ २

* * *

चातक हमेशा स्वांति को हो प्रेम से पल पल रटै।
पाकर अनेकों कष्ट भी हरगिज नहीं पीछे हटै॥
आनन्द में लवलीन हो सब ओर से मन को हटा।
सब नाचते हैं मोर बन में देखकर काली घटा॥ ३
कोयल रसालों में मुदित होकर बिचरती प्रेम से।
ऋतुराज का स्वागत जनाकर कूक करती प्रेम से॥
नभमें शरद् शशि देखकर अनुराग से उसके लिए।
उड़ती चकोरी प्रेम से आकाश में हर्षित हिए॥ ४

* * *

जाती गगन में दूर तक तोभी उसे पाती नहीं।
पिय प्राण खोकर भी तृषा इस प्रेम की जाती नहीं॥
मछली बिचारी प्रेम बश हो नीर का सहती रहै।
लवलीन हो आनन्द उसका मोद से लेती रहे॥ ५
उसके बिरह में एक पल भी ताप को सहती नहीं।
प्रीतम बिना उसकी कभी फिर जिन्दगी रहती नहीं॥
देखो कमल के प्रेम को सूरज बिना खिलता नहीं।
संसार में उसका किसी से मेल ही मिलता नहीं॥ ६

* * *

अतिशय कड़ाइ से निठुर हो काटता है काठ को ।
सुकुमार फूलों में फसै देखो मधुप की चाट को ॥
लवलीन होकर प्रेम में वह काल से डरता नहीं ।
पाकर अनेकों कष्ट भी उसको दुखी करता नहीं ॥ ७
संसार में प्रेमी अनेकों प्रेम प्याला पी रहे ।
भवसिंधु में दारुण दुखों से मुक्त होकर जी रहे ॥
लवलीन होकर प्रेम में सब स्वार्थ अपना तज दिया ।
ममता हटाकर, प्राण को भी प्रेम के अर्पण किया ॥ ८

* * *

पाकर प्रतापी प्रेम को होते न जग में दीन हैं ।
जलमें कमल की भांत प्रेमी सर्वदा स्वाधीन हैं ॥
कुछभी प्रतापी प्रेम के बलका न मिलता पार है ।
निर्भय रहें प्रेमी सदा होती न उसकी हार है ॥ ९
सच्चे दिलों में प्रेम का अनुराग जब होता कहीं ।
सन्मुख वहां पर दुष्ट की भी दुष्टता रहती नहीं ॥
हिंसक पशू भी बहुत से इस प्रेम में माते रहें ।
विष का उगलना छोड़ कर अनुराग दरशाते रहें ॥ १०

* * *

इस प्रेम का आनन्द कोइ सहज में पाता नहीं ।
समझे बिना इसका किसी को स्वाद कुछ आता नहीं ॥
सच प्रेम माते को कभी दुख स्वप्न में होता नहीं ।
रहता सदा आनन्द में प्रेमी कभी रोता नहीं ॥ ११
संसार है प्यारा उसे जो प्रेम के अनुकूल है ।
प्रेमी बिना तो स्वर्ग का भी सुख सरासर धूल है ॥
समझा न जिसने प्रेम को वह निरस जीवन खोरहा ।
कर्तव्यरत प्रिय प्रेमियों का सफ़ल जीवन हो रहा ॥ १२

* * *

प्रेम की महिमा

पावन परम इस प्रेम की चरचा जगत में चल रही।
अतिशय कठिन है समझना इस प्रेम की महिमा सही॥
इस प्रेम के बल से सहज चरखा जगत का चल रहा।
हर एक प्राणी जगत में इस प्रेम से ही पल रहा॥ १
पशु और पक्षी प्रेम से ही पालते संतान हैं।
इस प्रेम से ही तरुलता तृण पारहे सब प्राण हैं॥
छाई हुई है चर अचर में प्रेम की पूरण छटा।
परिपूर्ण हो सबके दिलों में प्रेम रहता है डटा॥ २

*　　*　　*

इस प्रेम के उत्साह में प्राणी कभी थकता नहीं।
इस प्रेम का बन्धन किसी से छूट ही सकता नहीं॥
सम्पन्न होकर प्रेम से तो नर्क भी अनुकूल है।
हो प्रेम से खाली अगर तो सुर सदन भी धूल है॥ ३
इस प्रेम में पारस बनाने की बड़ी ही शक्ति है।
इस प्रेम से बढ़कर नहीं कोई जगत में भक्ति है॥
चरचा न हो कुछ प्रेम की ऐसा कहीं भी थल नहीं।
इस प्रेम के बल की बराबर और कुछ भी बल नहीं॥ ४

*　　*　　*

इस प्रेम पूजन के बराबर और कुछ पूजन नहीं।
इस प्रेम धनसा स्वर्ग में इन्द्र का आसन नहीं॥
इस प्रेम के सन्मान में बढ़कर नहीं कुछ दान है।
इस प्रेम की समता करे ऐसा न कोई ज्ञान है॥ ५
सारे सुखों मे बुधजनों ने प्रेम सुख बढ़कर कहा।
प्रेमी मिला जब प्रेम से तब और क्या बाकी रहा॥
इस प्रेम के परिणाम से दाता बनें नादान भी।
बनता सरासर मोम है इस प्रेम से पाषाण भी॥ ६

*　　*　　*

सब छोड़ देता है कड़ाई प्रेम के आमोद में ।
सुख मानता है केशरी आकर हिरन की गोद में ॥
भव मुक्ति पाने के लिये कुछ है अगर तो प्रेम है ।
कुछ है कहीं आनन्द की सीधी डगर तो प्रेम है ॥ ७
इस प्रेम को पहिचानना आसान से आसान है ।
जाने बिना इस मंत्र को मिलता नहीं सन्मान है ॥
रहती नहीं दरकार कुछ भी प्रेम को धन धाम की ।
यह चाहता बिलकुल नहीं तारीफ अपने नाम की ॥ ८

* * *

सन्मान का अभिमान भी उसको कभी रहता नहीं ।
अपमान सहकर भी किसी को कुछ बुरा कहता नहीं ॥
झन्झट नहीं है जाति की नहिं चाह कुछ भी रूप की ।
करता नहीं परवाह बिलकुल चक्रवर्ती भूप की ॥ ९
नहिं पंडिताई की कला कुछ भी नहीं आचार है ।
इस प्रेम को केवल जगत में प्रेम का आधार है ॥
यह प्रेम ही हर हाल में सच्चा सहारा जीव का ।
इस प्रेम से प्यारा रहै प्राणी हमेशा पीव का ॥ १०

* * *

पहचानलो इस प्रेम को छल छन्द करना छोड़दो ।
नाना विषय की चाट का आनन्द करना छोड़दो ॥
छोटे बड़े सब प्राणियों के प्रेम को पहचानलो
अनुमान से अपनी तरह सब की दशा को जानलो ॥ ११
इस प्रेम का अंकुर अगर दिल में प्रकट हो जायगा ।
जन्म जन्मों का भरा संताप सब खो जायगा ॥
नर देह को पाकर अगर जो प्रेम को जाना नहीं ।
सच्चे दिलों से प्रेमियों का हाल पहिचाना नहीं ॥ १२

* * *

सूखे हिए में प्रेम की पड़ती नहीं ब्यौछार है ।
साधू बने तो क्या हुआ नरदेह को धिक्कार है ॥
जिस ठौर पर इस प्रेम का झरना सदा बहता रहै ।
हरएक प्राणी प्रेम की ही रागिनी कहता रहै ॥ १३
अभिमान का किंचित किसी को ध्यान भी आता नहीं ।
उस ठौर की तो स्वर्ग भी समता कभी पाता नहीं ॥
कानन सघन में यदि नहीं कोई झमेला पास हो ।
कंकड़ों की सेज पर प्रेमी अकेला पास हो ॥ १४

* * *

तज प्रेम अपना इष्ट जिसका मन कहीं जाता नहीं ।
उस जीव के आनन्द को सुरराज भी पाता नहीं ॥
यह जानकर मन का खजाना प्रेम से भर लीजिये ।
मजबूत होकर प्रेम से कर्तव्य कुछ कर लीजिये ॥ १५

* * *

* सेवा धर्म *

सेवा करो सेवा जगत में सिद्धियों का मूल है ।
सेवा बड़ी संसार में सब के लिये अनुकूल है ॥
सेवा परम कर्तव्य है सेवा बड़ा शुभ कार्म है ।
आनन्द दायक प्रेम-सेवा श्रेष्ठ सब से धर्म है ॥ १
सेवा हृदय का द्वार है बल बुद्धि आने के लिये ।
नैया बड़ी मजबूत है भव पार जाने के लिये ॥
सेवा गुरू माता पिता हैं गुण सिखाने के लिये ।
तम को हटाकर मुक्ति का रस्ता दिखाने के लिए ॥ २

* * *

सेवा सरल साधन मनोरथ सिद्ध करने के लिए ।
सेवा सुधाकर है सरासर ताप हरने के लिये ॥
सेवा सजीवन मूरि सेवा प्राण की भी प्राण है ।
सेवा सफलता के लिए रस्ता बड़ा आसान है ॥ ३
सेवा अगम उन्नति शिखर पर पहुंचने का यंत्र है ।
सेवा सकल आपत्तियों को काटने का मंत्र है ॥
सेवा परस्पर प्रेम की फुलवाड़ियों का फूल है ।
सेवा बिना आनन्द की अभिलाष करना भूल है ॥ ४

* * *

सेवा करो मेवा मिलै सच्ची मसल मशहूर है ।
संसार के सब पंडितों को बात यह मंजूर है ॥
इसके लिए मज़बूत बनकर कष्ट सहना चाहिये ।
संसार सेवा के लिये तय्यार रहना चाहिये ॥ ५
सबसे परस्पर प्रेम हो यह बीज बोना चाहिये ।
हो सकै जिस भांति मन से द्वेष खोना चाहिये ॥
समता सहित छोटे बड़े का भेद मिटना चाहिये ।
सन्मान या अपमान हो यह खेद मिटना चाहिये ॥ ६

* * *

गुस्सा न हो गंभीरता भरपूर होनी चाहिये ।
कुछ भी कहै कोई शिकायत दूर होनी चाहिये ॥
बढ़ती रहै हरदम दया का धाम होना चाहिये ।
दिल में हमेशा शांति का विश्राम होना चाहिये ॥ ७
भरपूर पावन प्रेम का भंडार होना चाहिये ।
जगमें लुटाने के लिये तय्यार होना चाहिये ॥
सब के द्रवित हो दिल परस्पर खूब मिलना चाहिये ।
सूखे नहीं ऐसे खुशी के फूल खिलना चाहिये ॥ ८

* * *

सर्वस्व देकर स्वार्थ को मुख पर न लाना चाहिये ।
बदला चुकाने की दिलों में बू न आना चाहिये ॥
तन मन बचन से सर्वदा यह मंत्र रटना चाहिये ।
उपकार करने से कभी पीछे न हटना चाहिये ॥ ९

*　　　*　　　*

इतिशम्

—:❋:—

बिपत्ति में धैर्य

रे पंकज नादान! सोच तू क्यों करता है? ।
सुख में फूला रहा, बिपति से क्यों डरता है? ॥
तुझपर ऐसी कड़ी आपदा नहीं रहैगी, ।
अधकार मय निशा सर्बदा नहीं रहैगी; ॥
होगा सबेरा फिर तुझे वह मित्र मिल जायगा, ।
पाकर वही आनन्द फिर तू मोद से खिल जायगा? ॥

—:❋❋❋:—
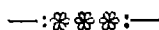
चेतावनी

काल खडा तय्यार शीस पर काल खडा तय्यार।
बने अगर तो किसी तरह से अपना जन्म सुधार ॥
शीस पर काल खडा तय्यार ॥ टेक ॥

मालिक से पूंजी ले आया करके कौल करार।
लगी हुई है हाट जगत में करले कुछ व्यौपार॥
शीस पर काल खड़ा तय्यार॥ १॥
हाट देखकर फूल गया तू भूल गया इकरार।
पूंजी खोकर सहनी होगी मालिक की फटकार॥
शीस पर काल खड़ा तय्यार॥ २॥

* * *

ऊंचे स्वर से बजै नगाड़ा है चलने की बार।
नहीं किया सामान सफ़र का सोता पैर पसार॥
शीस पर काल खड़ा तय्यार॥ ३॥
मंजिल कड़ी बड़ी कठिनाई मारग अगम अपार।
कोई नहीं सहायक होगा अड़े नाव मझधार॥
शीस पर काल खड़ा तय्यार॥ ४॥

* * *

धन दौलत सब यहीं रहैगी यहीं रहै घर द्वार।
मरघट तक पहुंचाकर तुझ को तज देगा परिवार॥
शीस पर काल खड़ा तय्यार॥ ५॥
चिकनी चुपड़ी देह चिता में हो जावैगी छार।
केवल साथ चलैगा तेरे दया दीन उपकार॥
शीश पर काल खड़ा तय्यार॥ ६॥

* * *

पूंजी अगर बढ़ाकर अपनी जाना हो भव पार।
सच्चे दिल से सकल सृष्टि को खूब किया प्यार॥
शीस पर काल खड़ा तय्यार॥
बनें अगर तो किसी तरह से अपना जन्म सुधार।
शीस पर काल खड़ा तय्यार॥ ७॥